कौटिल्य के राजनीतिक विचारों को लिखें

कौटिल्य को विष्णुगुप्त तथा कौटिल्य के नाम से भी जानते हैं। अधिकांश भारतवासी उन्हें आचार्य चाणक्य के नाम से जानते हैं। कौटिल्य प्राचीन भारत के एक महान कूटनीतिज्ञ राजनितिशास्त्री थे। ये अरस्तू के समकालीन तथा प्रसिध्द मगध सम्राट चन्द्रगुप्त के राजनीतिक गुरू तथा महामंत्री थे। उन्होंने उनके शिष्य चन्द्रगुप्त को मगध का सम्राट बनाकर तत्कालीन भारत मे यवनों के आक्रमण की विदेशी दस्तक का मुँह-तोड़ जबाव देकर भारतीय राजनीति का लोहा मानने के लिये समकालीन विश्व राजनीतिज्ञों विशेषकर सिंकदर महान के उत्तराधिकारियों को विश्व कर दिया था। यह भी एक विचित्र संयोग हैं पाश्चात्य राजनीतिक दार्शनिक अरस्तु के शिष्य की पराजय कौटिल्य के शिष्य द्वारा हुई। अपने शिष्य चन्द्रगुप्त को एक बहुत बड़ा सम्राट बनाने का एकमात्र श्रेय कौटिल्य को ही जाता हैं।

कौटिल्य के द्वारा लिखित अर्थशास्त्र में उल्लिखित राजनीतिक विचार

उन्होंने चन्द्रगुप्त के मार्गदर्शन के लिये ही अपने प्रसिद्ध ग्रंथ अर्थशास्त्र की रचना की थी। वे शस्त्र और शास्त्र दोनों के बहुत अच्छे ज्ञाता थे। वे सच्चे अर्थों में वह एक महान गुरू, देश प्रेमी, राजनीति विज्ञान के पंडित और महान कूटनीतिक दांव-पेचों के ज्ञाता थे।

कौटिल्य प्राचीन भारत के श्रेष्ठ राजनीतिक विचारक ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व के श्रेष्ठ राजनीतिक विचारकों मे से एक हैं। उनकी पुस्तक 'अर्थशास्त्र' विश्व के राजनीतिक साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक हैं। यह पुस्तक राजनीतिक यथार्थ और शासन की कला पर लिखी गई एक महान पुस्तक हैं।

डॉ. भारती मुखर्जी के शब्दों में," शासन की कला पर कौटिल्य की 'अर्थशास्त्र' नाम से विख्यात पुस्तक को अर्थशास्त्रीय धारा के समस्त साहित्य का सार कहा जा सकता हैं।"

अर्थशास्त्र एक विस्तृत पुस्तक हैं। इसमें मुख्य रूप से राज्य की प्रकृति, राज्य परिषद के कार्य तथा उसकी कार्यशैली, मंत्रिपरिषद् का संगठन और कार्य, गुप्चर व्यवस्था, अंतर्राज्य संबंध व इसके अंतर्गत मंडल व षड़गुण सिद्धांत का वर्णन किया गया हैं। न सिर्फ अर्थशास्त्र की विषय वस्तु बहुत व्यापक हैं, बल्कि कौटिल्य द्वारा विवेचन भी बहुत सूक्ष्म और पैना किया गया हैं।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र मूलरूप से राजनीति का गंथ्र हैं। इसकी विषय-वस्तु में जिन बातों को सहामाहित किया हैं वे सभी राजनीति से सम्बद्ध होने के कारण इसमें स्थान पा सकीं। अर्थशास्त्र के प्रमुख राजनीतिक विचार निम्नलिखित हैं–

राज्य की उत्पति

कौटिल्य ने राज्य की उत्पति सिद्धान्त का संकेत दिया है। अर्थशास्त्र उपलब्ध वर्णन के अनुसार संसार में अराजकता विद्यमान रहने की स्थिति में भयंकर दुःख और निरन्तर असुरक्षा की भावना से पीड़ित होकर जन समुदाय ने मनु के समक्ष उपस्थित होकर उनसे राज पदको धारण करने तथा सम्प्रभु शक्ति के उपयोग के माध्यम से प्रजा के आवरण को नियंत्रित और नियमित करने की प्रार्थना की प्रजा ने मनु को आश्वासन दिया कि इसके प्रतिफल में जनता शासन के प्रति सदैव आज्ञाकारिता का भाव धारण करेगी, तथा निशिचत सिद्धान्तों के अनुसार अपनी आय और अर्जित सम्पदाओं में से निश्चित भाग 'कर' के रूप में राजा को प्रदान करेगी, ताकि उसे राजकीय दायित्वों का पूरा करने के लिए साधन उपलब्ध हो सकें। उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि कौटिल्य राज्य को एक प्राकृतिक संस्था, दैवीय उत्पत्ति का परिणाम नहीं मानते।

राज्य की उत्पत्ति के विषय में कौटिल्य अपनी सुरक्षा द्वारा किये विवेचन में दो तथ्य अन्तर्निहित हैं–

1. राज्य मानवीय प्रयत्नों का परिणाम हैं, तथा मनुष्यों ने स्वयं राज्य की सत्ता को अपनी सुरक्षा और कल्याण के लिये स्वीकार किया है।

2. लोगों द्वारा राज्य के बाध्यकारी नियंत्रण को, अपनी सुरक्षा और कल्याण के हित में स्वीकार करने के प्रस्ताव, तथा 'मनु' द्वारा प्रथम शासक के रूप में एक प्रस्ताव को स्पीकार कर लेने के परिणाम स्वरूप राज्य की उत्पत्ति हुई है।

स्पष्ट है कि कौटिल्य ने आधुनिक अनुबंधवादी विचारकों (हॉब्स, लॉक व रूसो) की तरह ही राज्य को अनुबंध का परिणाम माना है।

कौटिल्य ने राज्य से पूर्व की अवस्था का जो चित्रण किया है वह हॉब्स की प्राकृतिक अवस्था से मिलता-जुलता है। कौटिल्य ने कहा कि उस अवस्था में मत्स्य न्याय प्रचलित था। इस स्थिति में औचित्य का नहीं, अपितु भौतिक शक्ति का बोलबाला था। ऐसी किसी संस्था के अभाव में जो दुर्बलों की रक्षा कर सके, दुर्बलों को बलवानों द्वारा पीड़ित किया जाता था। किन्तु राज्य की उत्पत्ति के विषय में हॉब्स और कौटिल्य के विवेचन में महत्वपर्ण अन्तर भी विद्यमान हैं। हॉब्स ने राज्य से पूर्व की अवस्था को प्राकृतिक अवस्था माना है। जिसमें न राज्य था, न समाज, और न ही उचित-अनुचित में भेद करने के लिये कोई मापदण्ड ही थे कौटिल्य ने राज्य से पूर्व की अवस्था को प्राकृतिक अवस्था नहीं, अराजक अवस्था में समाज का भी अस्तिव था। कौटिल्य ने यह नहीं माना कि उस अवस्था में समाज का भी अस्तित्व नहीं था। कौटिल्य और हॉब्स के दृष्टिकोण के मध्य अन्तर का महत्व राज्य की प्रकृति के विवेचन में परिलक्षित होता है।

राज्यों के प्रकार

अर्थशास्त्र के अध्ययन से स्पष्ट है कि कौटिल्य राजतंत्र का पोषक था और वह समस्त भारत पर एक सशक्त और सम्पन्न राजा का शासन स्थापित करना चाहता था। उसी की मान्यता हैं कि राजतंत्र में राज्यशक्ति कुलीन वर्ग के हाथ में रहती है और उपयुक्त अनुशासन और प्रजा में स्वामीभक्ति की स्थापना की जा सकती हैं, परन्तु अर्थशास्त्र में अन्य प्रकार के राज्यों का उल्लेख भी मिलता हैं, क्योंकि उस काल में तथा उससे पूर्व भारत में ऐसे राज्यों का अस्तित्व था। अन्य प्रकार के राज्यों को दैराज्य, वैराज्य तथा संघराज्य कहा जाता था।अर्थशास्त्र के अध्ययन से स्पष्ट है कि कौटिल्य राजतंत्र का पोषक था और वह समस्त भारत पर एक सशक्त और सम्पन्न राजा का शासन स्थापित करना चाहता था। उसी की मान्यता हैं कि राजतंत्र में राज्यशक्ति कुलीन वर्ग के हाथ में रहती है और उपयुक्त अनुशासन और प्रजा में स्वामीभक्ति की स्थापना की जा सकती हैं, परन्तु अर्थशास्त्र में अन्य प्रकार के राज्यों का उल्लेख भी मिलता हैं, क्योंकि उस काल में तथा उससे पूर्व भारत में ऐसे राज्यों का अस्तित्व था। अन्य प्रकार के राज्यों को दैराज्य, वैराज्य तथा संघराज्य कहा जाता था।

सप्तांग सिद्धांत

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में राज्य में राज्य की प्रकृति का वर्णन किया हैं। उसने राज्य के सात अंग बताए। ये अंग हैं-- स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड और मित्र।

राज्य के सात अंगों को ही 'सप्तांग' कहते हैं। कौटिल्य ने कहा कि अच्छे तथा सशक्त राज्य के लिए राज्य के सातों अंगों का समान महत्व हैं।

मंत्रिपरिषद्

कौटिल्य ने शासन की शक्ति मंत्रिपरिषद को माना है तथा राजा से अपेक्षा की है कि वह अपने समस्त राजकीय कार्य मंत्रिपरिषद् की सहायता से पूर्ण करे। कौटिल्य ने मंत्रियों को राज्य रूपी गाड़ी का दूसरा पहिया बताते हुए, शासकीय कार्यों में मंत्रियों के महत्व को स्पष्ट किया है।